बेहतर यही होगा कि आप कोशिश करें, कुछ सीखें बजाये इसके की आप कुछ करें ही नहीं। -अज्ञात।

विचार-प्रवाह

देहरादून, शनिवार, 26 फरवरी 2022

पेज थ्री

www.page3news.in

स्वास्थ्य सेवाओं की क्या क्षमता थी

इसी तरह आधे राज्य ऐसे हैं, जहां राज्य सरकार के कुल खर्च में से स्वास्थ्य के मद में किए गए खर्च का अनुपात कम हुआ है। स्वाभाविक रूप से खर्च में कमी का असर स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता पर होता है।

राधा शर्मा।।

नीति आयोग की ओर से जारी चौथी हेल्थ इंडेक्स रिपोर्ट कई दृष्टियों से गौर करने लायक है। सबसे पहले तो यही तथ्य ध्यान खींचता है कि लगातार चौथे साल ओवरऑल परफॉरमेंस के लिहाज से केरल टॉप पर रहा है। इस कैटिगरी में यूपी इस बार सबसे निचले स्थान पर है। लेकिन इसी रिपोर्ट में राज्यों की इंक्रीमेंटल परफॉरमेंस भी देखी गई है और इस कसौटी पर केरल 12वें स्थान पर खिसका नजर आता है। इंक्रीमेंटल परफॉरमेंस यानी प्रदर्शन में सुधार के लिहाज से यूपी पूरे देश में अव्वल है। 43 में से 33 मानकों पर उसकी स्थिति पहले की अपेक्षा बेहतर पाई गई है। ध्यान रहे इस रिपोर्ट में बेस ईयर 2018–19 है और रेफरेंस ईयर 2019–20। इसका मतलब यह हुआ कि राज्यों में साल 2018–19 के मुकाबले 2019–20 की स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति को परखा गया है। केंद्र शासित क्षेत्रों की श्रेणी में यूपी जैसी ही स्थिति दिल्ली की पाई गई है। ओवरऑल परफॉरमेंस के मामले में यह सबसे फिसड्डी क्षेत्रों में है, मगर इंक्रीमेंटल परफॉरमेंस यानी प्रदर्शन में सुधार की दृष्टि से सबसे अग्रणी क्षेत्रों में शामिल है।

निश्चित रूप से यूपी और दिल्ली की मौजूदा सरकारें प्रदर्शन में सुधार का श्रेय लेना चाहेंगी और इसमें कुछ गलत भी नहीं है। लेकिन अगर विभिन्न राज्यों में तुलना के सीमित नजरिए से थोड़ा हटकर देखा जाए तो पूरे देश की स्थिति खास संतोषजनक नहीं कही जा सकती। उदाहरण के लिए, सभी बड़े राज्यों के जिला अस्पतालों में स्पेशलिस्टों की कमी पाई गई है। यह जरूर है कि कुछ राज्यों में यह कमी नगण्य (जैसे राजस्थान में 2 फीसदी) कही जा सकती है, लेकिन मध्य प्रदेश जैसे राज्य भी हैं, जहां 58 फीसदी की कमी दर्ज की गई है। इसी तरह आधे राज्य ऐसे हैं, जहां राज्य सरकार के कुल खर्च में से स्वास्थ्य के मद में किए गए खर्च का अनुपात कम हुआ है। स्वाभाविक रूप से खर्च में कमी का असर स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता पर होता है। इसलिए यह देखा जाना चाहिए कि विभिन्न राज्यों में इस कमी की किसी और तरीके से भरपाई की कोशिशें भी हो रही हैं या नहीं।

बहरहाल, गौर करने वाली एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि यह रिपोर्ट जारी भले अब की गई हो, लेकिन इसमें कोरोना महामारी का दौर कवर नहीं हुआ है। कोरोना के दौर में स्वास्थ्य सेवाओं की क्या क्षमता थी, उसके सामने किस तरह की चुनौतियां आईं और उसके क्या सबके रहे, इन सबका अलग से अध्ययन किए जाने की जरूरत है। लेकिन यह रिपोर्ट भी इतना तो स्पष्ट कर ही देती है कि देश में स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति में सुधार की कोशिशें लगातार जारी रहनी चाहिए। वरना इस मामले में पिछड़े माने जाने वाले राज्य अपनी स्थिति बेहतर कर सकते हैं तो पारंपरिक तौर पर बेहतर माने वाले राज्यों की स्थिति बदतर होने में भी वक्त नहीं लगेगा।

धर्मसूत्र

अशोक वोहरा।

ये गृह्यसूत्रों की शृंखला के रूप में ही उपलब्ध होते हैं। श्रौतसूत्रों के समान ही, माना जाता है कि प्रत्येक शाखा के धर्मसूत्र भी पृथक–पृथक् थे। वर्तमान समय में सभी शाखाओं के धर्मसूत्र उपलब्ध नहीं होते। इस अनुपलब्धि का एक कारण यह है कि सम्पूर्ण प्राचीन वाङ्मय आज हमारे समक्ष विद्यमान नहीं है। उसका एक बड़ा भाग कालकवलित हो गया। इसका दूसरा कारण यह माना जाता है कि सभी शाखाओं के पृथक–पृथक् धर्मसूत्रों का संभवतः प्रणयन ही नहीं किया गया, क्योंकि इन शाखाओं के द्वारा किसी अन्य शाखा के धर्मसूत्रों को ही अपना लिया गया था। पूर्वमीमांसा में कुमारिल भट्ट ने भी ऐसा ही संकेत दिया है। आर्यों के रीति–रिवाज वेदादि प्राचीन शास्त्रों पर आधृत थे किन्तु सूत्रकाल तक आते–आते इन रीति–रिवाजों, सामाजिक संस्थानों तथा राजनीतिक परिस्थितियों में पर्याप्त परिवर्तन एवं प्रगति हो गयी थी।

संपादकीय

लेस-टैक्स हो बजट

देश की आर्थिक नीति दीर्घकालीन होनी चाहिए। एक स्वस्थ बजट वही होता है, जिससे राजस्व में बढ़ोतरी हो और उस राशि को देश के विकास में लगाया जाए। आगामी बजट में पूंजी का उचित वितरण और साधनों में सबकी भागीदारी के लिए सरकार को उचित दिशा तलाशनी होगी। आय कब बढ़ेगी? महंगाई कब घटेगी? मंदी का कोहरा कब छंटेगा? ये प्रश्न जनता के बेताल सत्ता में बैठे विक्रमादित्यों से पूछ रहे हैं। देश का पर्यटन उद्योग मुश्किल से गुजर रहा है। उसे बढ़ावा देने के लिए कुछ कदम उठाने चाहिए। विदेशी निवेशकों को आकर्षित करने के लिए उचित वातावरण बनाने की आवश्यकता है। बाजारों में धन की भारी कमी है। लिक्विडिटी का अभाव है। बाजारों का सेंटिमेंट बहुत ही खराब है। तैयार वस्त्र, चाय, हीरा और आभूषण उद्योग को बढ़ावा देना चाहिए क्योंकि ये निर्यात के जरिये विदेशी मुद्रा अर्जित करने में सहायक होते हैं। इस समय जनता किसी भी अतिरिक्त कर बोझ को स्वीकार करने की स्थिति में नहीं है। बजट के माध्यम से वित्त मंत्री को इन सवालों का जवाब देना होगा। गतवर्ष का बजट पेपरलेस था। उम्मीद की जाए इस बार का बजट 'टैक्सलेस' नहीं तो 'लेस टैक्स' वाला जरूर होगा।

बजट को लेकर आम जनता और अर्थशास्त्रियों से व्यापक चर्चा और संवाद करना जरूरी है। बजट से पहले इसका भी विश्लेषण किया जाना चाहिए कि पिछले बजट में किए गए आर्थिक सुधारों का क्या असर हुआ।

कभी सुपरहिट, कभी फ्लॉप

कन्हैयालाल घ. सराफ।।

बजट एक आर्थिक कसरत है। किसी भी लोकतांत्रिक सरकार को जनता के प्रति जवाबदेह होकर आगामी वर्ष के लिए आय–व्यय का अनुमानित विवरण देना होता है, जिसे बजट कहते हैं। हालांकि आम आदमी के लिए बजट केवल आंकड़ों का जंगल है। इस समय बढ़ती महंगाई और सिकुड़ती आय से जनता त्रस्त है। डीजल, पेट्रोल और सीएनजी की कीमतें बढ़ने के कारण सफर करना महंगा हुआ है। पिछले एक साल में दूध, गेहूं, चावल, शक्कर, दाल, फल, तेल, साबुन, मंजन, कुकिंग गैस, बिजली–पानी, सब्जियां, मसाले– सब महंगे हो गए हैं। किचन का बजट गड़बड़ा गया है। देश की आर्थिक सेहत बिगड़ रही है। उसे वेंटिलेटर के सहारे जिंदा रखना होगा। बजट को लेकर आम जनता और अर्थशास्त्रियों से व्यापक चर्चा और संवाद करना जरूरी है। बजट से पहले इसका भी विश्लेषण किया जाना चाहिए कि पिछले बजट में किए गए आर्थिक सुधारों का क्या असर हुआ।

बजट के पहले या बाद में कोई अतिरिक्त कर लगाने की घोषणा न करें। बजट नौकरशाही और नेताशाही की बनाई एक फिल्म की तरह होती है, जो कभी सुपरहिट, तो कभी फ्लॉप हो जाती है। लेकिन फिल्म का नायक आखिर में निर्दोष ही निकलता है। कई बजट आर्ट फिल्मों की तरह निकलते हैं। यानी बजट भले ही अच्छा हो, वह सबको पसंद नहीं आता। सरकार को काला धन बाहर लाने के लिए 'स्वैच्छिक आय घोषणा' जैसी कोई पहल भी करनी चाहिए। इससे मनी लॉन्ड्रिंग कम होगी। इस प्रकार से प्राप्त धन का इस्तेमाल नई सड़कों, राष्ट्रीय महामार्गों, एक्सप्रेस–वे के निर्माण के लिए हो। इसका प्रयोग प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए विशेष कोष बनाने में भी किया जा सकता है। 31 दिसंबर 2021 तक करदाताओं की संख्या 5 करोड 89 लाख थी, जो देश की आबादी को देखते हुए बहुत कम कही जाएगी। राजस्व में वृद्धि के लिए करदाताओं की संख्या बढ़ाना जरूरी है। इसके साथ राजस्व के लिए नए स्रोत तलाशना भी आवश्यक है। केवल जुबान और बयान से काम नहीं चलेगा। परिस्थिति के अनुसार, सरकार को अपना 'टैक्स प्लान' बनाना पड़ेगा। ईमानदारी से आयकर भरने वालों को सरकार परेशान न करे, लेकिन इरादतन करवंचन करने वालों के विरुद्ध सख्त कार्यवाही करे। माना कि सरकार की नीयत और नीति दोनों अच्छी है, लेकिन इसे साबित करने के लिए वह आगामी बजट जनता की आकांक्षाओं, अपेक्षाओं और आवश्यकताओं के अनुरूप लाए।

कृषि देश के विकास की रीढ़ है। किसानों की मजबूरी और जरूरतों को समझकर उन्हें गंभीर आर्थिक संकट से उबारने की जरूरत है। जिस उत्पादन पर श्रमिक का इस्तेमाल ज्यादा होता है, वहां न्यूनतम कर लगाए जाने चाहिए। असंगठित क्षेत्र, जो भारतीय अर्थव्यवस्था का एक बहुत बड़ा हिस्सा है, इस समय बुरी तरह प्रभावित है। यह 90 प्रतिशत श्रमिकों को रोजगार देता है। रोज कुआं खोदो, रोज पानी पियो वाला है यह उद्योग। देश के जीडीपी में इसका 50 प्रतिशत योगदान है। रोकड़ा संस्कृति इस क्षेत्र की आत्मा है। सारा कारोबार दिहाड़ी पर चलता है। इस क्षेत्र को राहत देना बहुत जरूरी है।

वित्त मंत्री को समझने की जरूरत है कि किसी भी चीज को उसकी 'इलास्टिसिटी' से अधिक तानने पर वह टूट जाती है। गुब्बारे को आप एक सीमा से अधिक फुलाएंगे तो वह फट जाएगा।

सूडोकू नवताल- 5205

कठिन

	8			6				
					5			
		9				7		3
	1			8				2
			7		4			
6				3			8	
5		7				4		
			8					
				1			6	

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं।
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें।
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।
- पहेली का केवल एक ही हल है।

सूडोकू नवताल -5204 का हल

9	4	5	3	1	8	7	6	2
1	8	6	7	2	5	4	9	3
2	7	3	9	4	6	8	1	5
6	3	9	1	7	4	2	5	8
5	2	4	8	9	3	6	7	1
7	1	8	6	5	2	9	3	4
4	6	7	5	8	1	3	2	9
8	9	1	2	3	7	5	4	6
3	5	2	4	6	9	1	8	7

अपना ब्लॉग

घाटे की सरकारी योजनाए हो बंद

मोहन। सच पूछिए तो बजट प्रस्ताव बिजली के तारों की तरह होते हैं। यदि ढंग से जुड़ जाएं तो रोशनी देते हैं। गलत ढंग से जुड़ने पर झटके देते हैं। महंगाई में अत्यधिक वृद्धि के मद्देनजर आयकर छूट सीमा बढ़ाकर 10 लाख किए जाने की जरूरत है। केवल शेयर बाजार का सूचकांक बढ़ाना ही अच्छे बजट का लक्षण नहीं होता। अच्छा बजट वह होता है, जिससे लोगों का जीवनस्तर ऊपर उठे। बजट घाटा कम करने के लिए मगरमच्छी दांत और व्हेल सी आंत वाली घाटे की सरकारी योजनाओं को बंद कर देना चाहिए। देश का वस्त्र उद्योग सर्वाधिक रोजगार देता है। स्पिनिंग, वीविंग, डाईंग–प्रिंटिंग के कारखाने पूरे देश में फैले हैं। निर्यात के जरिए विदेशी मुद्रा अर्जित करने में भी इसका बहुत बड़ा योगदान है। इसके लिए अलग पैकेज देना चाहिए। शैक्षणिक संस्थाओं द्वारा विभिन्न खरीदी पर जो जीएसटी लगता है, उसे हटा देना चाहिए, क्योंकि उन्हें कोई सेटऑफ नहीं मिलता।